ESTD:—1932

Sogani & Sons

Stockists & Commission Agents,

C/o. Madanchand Nemichand
P-15- Kalakar Street Calcutta

~~Imperial Road,~~

Ref. No. ..... **Ajmer** २८-६-५९

श्री-

निहालचंद्र का परम धर्म स्नेह- आपका कार्ड अजमेर से भिजवाया हुआ मुझे यहां मिला- मैं करीब १५ दिन से कलकत्ता ही हूँ व्योपार संबंधी कार्य में आया हुआ हूँ-

श्री. गुरुदेव को मेरा अत्यंत भक्ति पूर्वक नमस्कार कहना और सर्व भाइयों को धर्म स्नेह- मुझे अत्यंत खेद होता है कि मैं बजाये वहां रहने के इधर उधर ही रहना हो रहा है- अभी करीब १५ दिवस के और यहां हूं और शायद अधिकतर यहां ही रहना होगा- चोमासे में एक माह के करीब वहां रहने की अवश्य पूर्ण भावना है—

स्वामी कार्तीकेयानु प्रेक्षा की प्रतियें मैं अजमेर जाने से भेजने में समर्थ हो सकूंगा- यहां कलकत्ता में सोनगढ़ से संबंधित कौन भाई रहा करते हैं यदि हो सके तो पता भेजना—

और यहां योग्य कार्य लिखना—

धर्म स्नेही
नीहालचन्द्र सोगानी

Sogani & Sons

Imperial Road,

Ref. No. Ajmer 3. 7 1950

श्री.

निहालचंद्र का धर्मस्नेह - आपका कार्ड प्राप्त हुआ, आरंभ ही में सर्वत्र उपादेय, यथोचित विशेषणों द्वारा स्तुत्य गाढ़ आत्म संवेदन रूपी आपका नमस्कार पढ़कर व आत्म-स्वास्थ्य में निरंतर वृद्धि की भावना देखकर चित्त अत्यंत प्रसन्न हुआ।

पूज्य गुरुदेवश्री का मुमुक्षगण सहित राजकोट के विहार का सुंदर धर्म प्रभावना पूर्वक पूर्ण होना जानकर इस बात की प्रतीति होती है मानो नायक सहित सर्व संघ का निश्चय प्रभावना रूपी कार्य भी शीघ्र व निर्विघ्न रीति से पूर्ण होने वाला है। आप श्री का, निश्चित स्थान - सोनगढ़ का आगमन इस बात का द्योतक होता है मानो हम सब की परिणति का त्रिलोक रूपी राजकोट का विहार रूपी भ्रमण समाप्त होकर निश्चित अविनाशी स्वस्थान - अमृतमयी, चैतन्य लोक आत्मगढ़ में आगमन हो रहा है जहां कि सहज आनंद से तरंगित सहज आत्म रमण रूपी विहार सादि अनंत काल तक स्वाभाविक ही होता रहेगा।-

पूर्व उदय के योग से मैं आप पुण्यशालियों की तरह श्री गुरुदेव के समीप रहकर उनके संग का - उनके वचनामृत का निरंतर लाभ नहीं ले सक रहा हूं इसका

मुझे महान २ खेद होता है, साथ ही उनके बोध द्वारा बोधित मुझे यह संतोष भी होता है कि निश्चय से सत्गुरुदेव मुझसे दूर नहीं हैं, जहां मैं हूं वहां ही मेरे गुरु हैं अतः मैं मुझमें मेरे गुरुदेव को देखने का सतत प्रयत्न करता रहता और जब २ गाढ़ दर्शन होता है तब २ अपूर्व अपूर्व रसास्वाद का लाभ लेता रहता हूं, मानसिक विकल्प स्वयं भार से हलका होता रहता हूं, सहज ज्ञान धन स्वभावमें वृद्धि पाता रहता हूं, सोनगढ़ की चिन्मय, भव्य, दिव्यमूर्ति को अधिक समीप होकर गहन दृष्टि से देखता रहता हूं।—

आशा करता हूं जुलाई माह के अन्त तक लगभग एक माह के लिये वहां रहने को आ सकूंगा। आशा है वहां सर्व कुशल होंगे। आपका वहां का पत्र कभी २ आने से एक प्रकार का संबंध वहां का बने रहने का सौभाग्य मुझे प्राप्त है यह मेरे पुण्य का योग है ऐसा मैं मानता हूं।— यहां योग्य कार्य लिखें।—

धर्म स्नेही
तीहाजचंद्र सागानी

Tele { Gram : "SOGANS"
Phone : "JORASANKO 2180"

ESTD. 1932.

Head Office { IMPERIAL ROAD
AJMER

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS,

12, NOORMAL LOHIA LANE.

Calcutta 21-6 1952.

Selling Agents :
THE GWALIOR RAYON SILK MFG. (WVG.) CO., LTD.
GWALIOR

BHARAT TRADING CO., LTD.
Birlanagar (GWALIOR)

Stockists :
BIRLA HOSIERY PRODUCTS
Birlanagar (GWALIOR)

WOOLEN AND STAPLE FIBRE CLOTH
Manufactured by
J. C. MILLS LTD.
Birlanagar (GWALIOR)



श्री -

प्रत्ये नीहालचन्द सोगानी का धर्म स्नेह -
आपका कार्ड अजमेर से लौटकर यहां आया
कारण मैं अधिकतर आजकल यहां ही
रहता हूं - योग कुछ ऐसा ही है कि आर्थिक
संबंध की अपेक्षा प्रत्यक्ष तौरपर मेरा
धार्मिक संग इस समय दूर सा हो रहा है
और मैं बहुत समय से सोनगढ़ नहीं
आ सक रहा हूं - यह कहना व्यर्थ है कि
अंतरंग में, यहां होते हुए भी मुझे वहां की
स्मृतियें, ऐसा कोई दिन न होगा कि नहीं
आती रहती होवें - पूज्य गुरुदेव की
स्मृति इस समय भी आ रही है व आंखों
में गरम आंसू आ रहे हैं कि उनके संग रहना नहीं
हो रहा है - उनका असंग रुचि का उपदेश
(अथवा स्वसंग का) कानों में गूंजता रहता है
और उसकी रमणता से ही यहां की उपाधियें
ढीली सी रहती हैं - उस दिन की प्रतीक्षा में हूं

कि कब उस गरजती हुई दिव्य मूर्ति के चरणों में शीघ्र अपने आपको पाऊं—

SOGANI & SONS
STOCKISTS & COMMISSION AGENTS
12, NOORMAL LOHIA LANE.
ESTD. 1932.
Head Office: INPERIAL ROAD AJMER
Tele: Gram: "SOGANS" Phone: "GRAHANKO 2180"
Calcutta 21-6-1952
Selling Agents: THE GWALIOR RATON SILK MFG. (W.G.) CO., LTD. GWALIOR
BHARAT TRADING CO., LTD. Birlanagar (GWALIOR)
Stockist: BIRLA HOSIERY PRODUCTS Birlanagar (GWALIOR)
WOOLLEN AND STAPLE FIBRE CLOTH Manufactured by BILLS LTD. Birlanagar (GWALIOR)

वहां से नियमसार गुजराती की एक प्रति वी.पी. से यहां ऊपर लिखे पते पर भिजवा देना — इन दिनों अजमेर से दैनिक प्रसाद भी नहीं आ रहा है — यदि सहूलियत से हो सके तो मेरे नाम का बजाय अजमेर भिजवाने के यहां भिजवाने का प्रबंध कर देना। यदि वहां से माहवारी आदि का रुपया नहीं पहुंचा होवे तो यहां वी.पी. से भिजवा देना —

आशा करता हूं आप की परिणति स्वस्थ होगी — पू. गुरुदेव के चरणों में मेरा सादर भक्तिपूर्वक नमस्कार — और सब भाइयों से धर्म स्नेह —

धर्म स्नेही

भोहाल — वैद्य सोजानी

मालूम हुआ है यहां पं. इंद्रचन्द्र जी के शरीर में पक्षघात की व्याधि हुई है, कुछ सुधार है — पं. भगवानदास जी वहां ही हैं, विचारों में बहुत अधिक अंतर है क्या कुछ परिवर्तन हुआ है?

Tele { Gram : "SOGANS" Phone : "Jorasanko 2180"

ESTD. 1932.

Head Office { IMPERIAL ROAD. AJMER.

SOGANI & SONS.

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12, NOORMAL LOHIA LANE,

Ref. No. ..... 2 Calcutta, ... 195 .

स्वभाव सन्मुख तीव्र वेग करे यह ही सबसे श्रेष्ठ है, व शीघ्र मनोरथ पूर्ण होने का यह ही शुभ लक्षण है—

बंध रुचिवाला सर्व क्षेत्र कालादिक में बंधस्वरूप ही रहता है, अबंध रुचिवाला सर्व क्षेत्र कालादिक में अबंधस्वरूप ही रहता है, यह नियम है।

" देहाभिमाने गलिते, विज्ञाते परमात्मनि।
यत्र यत्र मनो याति, तत्र तत्र समाधयः।"

"श्रीमद्"

तीव्रताप बरसात इच्छती है व बादल जल स्वरूप परिणम जाते हैं— ऐसे धनिष्ठ संबंध (निमित्त-नैमित्तिक) जगत में हैं— पर इनके अस्थिर स्वभाव को जानकर ज्ञानी इन्हें नहीं इच्छते— नि. नै. स्वभाव के अभाव-स्वरूप सहज नित्य निरीच्छक स्वभाव को ही इच्छते हैं और यह ही योग्य भी है—

मा. रूपचंद ने अभी तक कपड़े नहीं भिजवाये उन्हें आज लिखा है, शीघ्र भिजवायें अन्यथा वैसा जवाब लिखें—

मेरी जैसी दशा वालों को तो आपने पछेवड़ी व तैमत आदि के कपड़े के लिए समय अधिक ही दिया था, वह उचित ही था— बेमानों को तो देर अबेर के लिये लौकिक सज्जन भी क्षमा करते हैं—

अचरज बहिन व बच्चियों को धर्म प्रेम— सब पड़ोसियों व मिलनेवालों को यथायोग्य— आशा है गुलाब बहिन की शारीरिक अवस्था अब अनुकूल है व शान्ता बहिन को श्वास रोग भी—

सहज ज्ञानामृत इच्छुक
नीहालचंद →

Tele { Gram : "SOGANS" / Phone : "Jorasanko 2180"
ESTD. 1932.
Head Office { IMPERIAL ROAD. AJMER.

2

SOGANI & SONS.

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12, NOORMAL LOHIA LANE,

Ref. No. ..... Calcutta, मंगलवार १८-५ 1953.

ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः

तीव्र धर्मानुरागी गुलाबबहिन व शान्ताबहिन

धर्मस्नेही का पत्र दूर से देखते ही चित्त प्रसन्न हो उठता है - आपका कार्ड पढ़ा -

धन्य हैं गुरुदेव, उनका जन्म दिवस व जयन्ती का प्रत्यक्ष लाभ लेनेवाला पुण्यशालीयों का समूह -

जिनके दर्शन मात्र से तीव्र मुमुक्षु कृतकृत्य हो जाते हैं, ऐसे गुरुदेव के जन्म दिवस वारंवार उजवाते रहें यह ही भावना है।

एक युग से आपकी निरंतर पूज्य परमोपकारी गुरुदेव के प्रति भक्ति व तत्व की तीव्र जिज्ञासा भरा हृदय, हृदय में पूर्ण अंकित है - प्रारब्धने, अबके वहां कैसहवास का ऐसा संयोग कराया कि वहां की अनुपस्थिति में, मनोयोग, वहां के लक्ष आश्रित, मौन पणे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आत्मकथा करता रहे - मानों भावी अपूर्व विकल्पों के लिये एक नये निमित्त का जन्म हुआ -

यहां संग, असत्संग का है, उदय नीरस है - वहां का योग निकट भविष्य में होने के आसार दिखाई नहीं देते, अतः अत्यंत उदासीनता है व व्यवहार में तो बेभान सी दशा हो जाया करती है -

सत्गुरु द्वारा प्राप्त अनुभव ऐसे काल में विषमता आदि को समता पणे वेदे व अप्रतिबद्ध

Tele { Gram : "SOGANS"
Phone : "Jorasanko 2180"

ESTD. 1932.

Head Office { IMPERIAL ROAD.
AJMER.

3

SOGANI & SONS.

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12, NOORMAL LOHIA LANE,

Ref. No. .....

Calcutta, 28. 6 1953

धर्मप्रेमी गुलाबबहिन व शान्ताबहिन
से नीहालचन्द्र का धर्मस्नेह-
कार्ड १ आपका लगभग पंद्रह दिवस
पहिले मिला था - मैं कार्यवश रांची गया
हुआ था अतः जवाब में विलंब हुआ -
आशा है परम कृपालु गुरुदेव
सुख शान्ती में विराजते होंगे व आप
लोग निरंतर उनकी अमृतमयी वाणी
का लाभ लेते हो ओगे - यहां तो पुण्य
योग ही ऐसा नहीं है कि वहां का लाभ
शीघ्र २ मिला करे - निवृत्ति के लिये
जितना अधिक छटपटाता हूं उतना
ही अधिक इससे दूर रहता हूं ऐसा
योग अबके हो रहा है - कई बार तो
फूट २ कर रोना सा आजाता है - शायद
ही कोई दिवस ऐसा निकलता है कि
वारंवार वहां का स्मरण नहीं आता होवे -
किसी ने कहा है :-
"मिलत एक दारुण दुःख देई, बिछुड़त एक प्राण हर
लेई" -

Tele { Gram : "SOGANS" / Phone : "Jorasanko 2180"
ESTD. 1932.
Head Office { IMPERIAL ROAD. AJMER.

SOGANI & SONS.

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12, NOORMAL LOHIA LANE,

Ref. No. 2 Calcutta, 195 .

सो संयोगों की अपेक्षा यहां तो ऐसे ही ऐसे संग ~~[illegible]~~ में रहना पड़ रहा है जहां कि दारुण दुख का अनुभव ~~[illegible]~~ हुआ करे-

परम कृपालु गुरुदेव कहते हैं कि ऐसे दुख सुख भावों को पूर्ण रूप से, एकाकार रूप से जीव को नहीं भोगना चाहीए - सम्यक् एकान्त रूप, स्वरूप दृष्टि के बल से सहज ही, अंशे अंशे, जीव इन से, क्षणे क्षणे सरकता रहे, भिन्न पड़ता रहे व ऐसी दृष्टि का अभ्यास निरंतर बढ़ता रहे यह ही भावना है-

मुझे बहुत अधिक शरम आती है कि आपका बताया हुआ तुच्छ कार्य भी मैं नहीं कर सका - ५ दिन से रोजाना बिना चरबी के कपड़ों की तलाश कराई - पर यहां वैसी चीज़ नहीं मिल सकी - सोचा था कपड़े मिलने पर ही पत्र लिखूंगा, पर ऐसा नहीं हो सका - मद्रास आदि तरफ अभी जाने की कोई आशा नहीं है - भा. रूपचंद ने भी कोई जवाब नहीं दिया - ऐसी हालत में अभी तो आप वहां के ही किसी सज्जन द्वारा प्रबंध कर लेवें तो उत्तम होगा - आशा है मेरी इस असमर्थता के लिये मैं क्षमा योग्य हूं - धर्मस्नेही - नाहालचंद्र -

Tele { Gram : "SOGANS" Phone : "Jorasanko 2180"
ESTD. 1932.
Head Office { IMPERIAL ROAD. AJMER.

4

SOGANI & SONS.

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12, NOORMAL LOHIA LANE,

Ref. No. ..... Calcutta, ५-६ 1953.

धर्म प्रेमी

से नीहालचन्द्र का धर्म स्नेह-
कार्ड आपका मिला, पूर्व पत्र कुछ चिन्तित
दशा के समय लिखा गया था, अतः शायद
आपको कुछ ख़याल सा हुआ दिखता है-
जिस सामान्य ध्रुव स्वभाव में चिंता
व अचिंता दोनों ही पर्याय का अभाव है
उसके आश्रय पश्चात बेचारी अल्प
चिन्ता की स्थिति ही कितनी?-
पू. गुरुदेवश्री की अनुभव रस से
भीगी हुई वाणी वहां कर्ता कर्म अधिकार
की वर्षा कर रही है- अहा! आपकी
इस हार्दिक भावना का मैं हृदय से स्वागत
करता हूं कि मैं भी आप सबों के संग
इस वर्षा में स्नान करूं-
अरे विकल्प! यदि तुझे तेरी
आयु प्रिय है तो अन्य सब को गौण कर
व गुरुदेव के संग में लेचल वरना उनका
दिया हुआ ~~[illegible]~~ वीतरागी अस्त्र शीघ्र
ही तेरा अंत कर डालेगा-

स्वसंग, गुरुसंग व मुमुक्षु संग के अलावा दूसरे संग को नहीं इच्छते हुए भी, अरे प्रारब्ध! विषतुल्य संग में रहना पड़ रहा है — खेद है —

पूर्ण चेष्टा है शीघ्र योग मिलते ही वहां आऊं; परंतु अभी कोई नज़दीक समय दिखाई नहीं देता है — फिर भी प्रयत्न पूरा है —

सबों को यथायोग्य।

धर्मस्नेही

नीहालचंद

Tele { Gram : "SOGANS"
Phone : "Jorasanko 2180"

ESTD. 1932.

Head Office { IMPERIAL ROAD.
AJMER.

SOGANI & SONS.

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12, NOORMAL LOHIA LANE,

2

Ref. No. ..... Calcutta, ... 195 .

(3) धन धन साधर्मी जन, मिलन की घरी-
बरसत, भ्रम ताप हरन, ज्ञान घन झरी -

वहां सर्व मुमुक्षुमंडली श्री गुरुदेव की
धर्मामृत-वाणी-पान में मग्न है, विचार
आते ही, दूर रहने रूप दुर्भाग्य का खेद होता है-

(1) चिद्राय गुन सुनो, सुनो प्रशस्त गुरु गिरा-
समस्त तज विभाव, हो स्वकीय में थिरा।

(2) कुगुरु कुदेव कुश्रुत सेये मैं, तुमं मत हृदय धरयो ना
परम विराग ज्ञानमय तुम, जाने बिन काज सरयो ना-

(3) हे जिन, मेरी, ऐसी बुधि कीजे
राग द्वेष-दावानल तें बचि, समता रस में भीजे -

धर्म स्नेही -
नीहालचंद

Tele { Gram : "SOGANS" Phone : "Jorasanko 2180"
ESTD. 1932.
Head Office { IMPERIAL ROAD. AJMER.

SOGANI & SONS.

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12, NOORMAL LOHIA LANE,

ऐसे मुनिवर देखे वनमें, जाके राग द्वेष नहीं मनमें -

Ref. No. ..... ~~Calcutta~~, २४-८ 1953.

कालीमपोंग (दार्जीलिंग)

आत्मार्थी गुलाब बहिन व शान्ता बहिन,

मैं कलकत्ता से एक माह लगभग हुआ बाहिर गया था परंतु खेद है सोनगढ़ आने का सौभाग्य नहीं हो सका - सेठ बछराजजी के साथ "गया" जाना हुआ था वहां वर्णीजी से भी मिलना हुआ - एक तरफ़ चैतन्य है दूसरी ओर कृत्रिम जड़, यह निर्णय निकला - से बछराजजी व मोहनलाल भाई का सोनगढ़ जल्द जाने का विचार है परंतु खेद है मैं फिर भी अभी नहीं आ सकता, दिवाली के पास तक आना हो सकेगा ऐसी आशा है - परसों यहां से कलकत्ता जाऊंगा -

वहां परमपूज्य श्री सद्गुरुदेव परम सुख शांती में विराजते होंगे हृदय में उनको नमन करता हूं -

(१) अपनी सुधि भूल आप आप दुख उपायो -
ज्यों शुक नभ चाल विसारि, नलिनी लटकायो -

(२) मन वच तन करि शुद्ध भजो जिन, दाव भला पाया -
अवसर मिलै नहीं ऐसा, यों सत्गुरु गाया -

TELE { GRAM : "SOGANS" PHONE : 33-4735

ESTD. 1932.

HEAD OFFICE { IMPERIAL ROAD AJMER

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12. NOORMULL LOHIA LANE.

ॐ

Calcutta 2-1 1953 4

Selling Agents :

J. C. MILLS LTD.
Birlanagar.

THE GWALIOR RAYON SILK MFG. (WVG.) CO., LTD.
(Gwalior)

BHARAT TRADING CO., LTD.
Birlanagar,
GWALIOR.

आत्मार्थी

आशा है परम कृपालु उपकारी श्री गुरुदेव सुख शान्ती में बिराजते होंगे- निर्जरा अधिकार - व श्री मोक्षमार्ग प्र. का आठवां अध्याय बहुत सरस चल रहा होगा-

पत्र आपका मिला- समाचार नीगाह लिये- [illegible] नये मिले हैं - बड़ा मिला नहीं- परसों सोमवार पारसल से दवाई कंपनी वाले डाइरेक्ट यह तीन डब्बे आपको भिजवा देंगे- कल पोस्ट आफ़ीस बंद है- अतः परसों रवाना हो सकेंगे- पारसल बन गया है- आशा है शारीरिक स्वास्थ्य में लाभदायक पड़ेंगे-

गुरुदेवश्री के चलोटा आदि बाबत भेजे गये कपड़े की फ़िर पूरी छानबीन की गई है- जिन २ व्योपारीयों से यह कपड़ा खरीदा गया था उन्होंने सबने बिना चरबी का इसे बताया है परंतु एक अन्य व्यक्ति ने कहा कि यह कपड़ा बिना चरबी का होना मुश्किल है- ऐसी हालत

में इसकी और पूरी छान बीन करने का प्रबंध किया है- पूरी जांच होते ही २-३ दिवस में इस विषय में और लिख सकूंगा- शंकित अवस्था में उसे उपयोग में लिखना अच्छा नहीं—

आपलोगों का विहार समय का प्रोग्राम जाना- जैसा अनुकूल योग होगा, गिरनार यात्रा आदि के समय का मेल मिलाने की चेष्टा करूंगा- परंतु अवयोग होना कुछ कठिन सा दिखाई पड़ता है—

आपलोगों को व्यक्त करने में असमर्थ हूं कि वहां के लिये मुझे कितनी उत्सुकता रहती है- महाराज श्री के विहार पहिले उनके प्रवचन- साक्षात

समय पर वहां नहीं पहुंच सकने के विषय पर आपकी परेशानी जानी- आपके वाचक शब्दों से वाच्य भाव का अनुमान होता है- मोक्षार्थी अपने क्षणिक अल्पकालीन भावों का मूल्य नहीं आंकते-

सबों को यथायोग्य-

धर्मस्नेही
नीहाल चंद्र

TELE { GRAM : "SOGANS" PHONE : 33-4735

ESTD. 1932.

HEAD OFFICE { IMPERIAL ROAD AJMER

8

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12. NOORMULL LOHIA LANE.

Calcutta 7-1 1954

Selling Agents :

J. C. MILLS LTD.
Birlanagar.

THE GWALIOR RAYON SILK MFG. (WVG.) CO., LTD.
(Gwalior)

BHARAT TRADING CO., LTD.
Birlanagar,
GWALIOR.

आत्मार्थी

आशा है परमउपकारी गुरुदेवश्री सुख शान्ति में विराजते होंगे—

गहरी छानबीन कराने पर, चलौटा कापड़ के सूत में चरबी लगती है, ऐसी शंका पैदा हो गई— कपड़े में मांडी नहीं लगती अतः चरबी काम में नहीं आती ऐसा बेचवाल दुकानदारों का कहना था— अतः पहिले वाला कपड़ा शंकित अवस्था में गुरुदेवश्री के उपयोग में नहीं आना चाहिए—

दूसरा अच्छा कपड़ा इस प्रयोजन का अभी मिल नहीं सका है— साधारण सा भेजने का जी नहीं करता है— अच्छा मिलने पर भिजवाऊंगा— ३४" का एक मिला था परंतु ३६ इंच बिना कार्य शायद नहीं चलेगा इसलिये नहीं लिया गया—

मुझे अत्यन्त २ खेद है कि सर्व श्रेष्ठ वस्तु महाराजश्री की प्राप्ति बाद भी उन से दूर होने का योग अभी वर्तता है व विहार पहिले वहां आना नहीं होता दिखता है—

धर्मस्नेही
नीहालचंद

लौटना पड़ा - अब इस हालत में उधर जल्द आने का प्रोग्राम फिलहाल नज़र नहीं आता है - सेठ बछराजजी, मालूम हुआ कि सोनगढ़ गये हैं - पहुंचे होंगे -

पुण्य योग नहीं है वहां का संयोग नहीं है - असाधिकर वातावरण का योग है - महान अफ़सोस है - आपकी बारंबार की भावनाओं को, मुझे वहां बुलाने को, मैं भली भांति समझ सकता हूं - मेरा भी हृदय वहां के लिये अब आतुर है - काफ़ी समय हो गया है - पूज्य गुरुदेव की व सोनगढ़ के वातावरण की स्मृतियें बारंबार उत्साह को बढ़ाती रहती हैं - पापबंध ढीले पड़ते हैं - पुण्यबंध वृद्धि पाते हैं, विवेक में हैं - पर इन सबसे क्या - अहो, गुरुदेव आपने तो इन दोनों से ही निराली वृत्ति दिखा दी है, जो कि इनके होते हुए भी विचलित नहीं होती, खूंटे के सहारे से डिगती नहीं है, उसे द्रव्य, क्षेत्र काल भाव का प्रतिबंध नहीं है - पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि जो कुछ लाभ है सो तो यह वृत्ति ही है अनंत सुखों के पिंड के साथ रहती है फिर चिन्ता काहे की, यह तो स्वयं स्वभाव से ही चिंता रहित है, निश्चिंत वृत्ति में चिन्तित वृत्ति का तो अत्यंत अभाव है - हे भगवान आपकी यह वाणी [illegible] में नित्य [illegible] यह [illegible]

TELE { GRAM : "SOGANS"
PHONE : 33-4735

ESTD. 1932.

HEAD OFFICE { IMPERIAL ROAD
AJMER 12

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12. NOORMULL LOHIA LANE.

ॐ

Calcutta 27-6 1954

Selling Agents :

J. C. MILLS LTD.
Birlanagar.

THE GWALIOR RAYON SILK MFG. (WVG.) CO., LTD.
(Gwalior)

BHARAT TRADING CO., LTD.
Birlanagar,
GWALIOR.

आत्मार्थी

से नीहालचन्द्र का धर्मस्नेह पत्र १ पहिले दिया सो पहुंचा होगा— आशा है पूज्य परम उपकारी सद्गुरुदेव सुख शांति में विराजते होंगे— व श्रोता गणों को अमृत रस में स्नान करने की प्रेरणा मिलती होगी—

आज पत्र डालने का कारण यह है कि कवरों पर यहां का पता किया था वह कवर भूल से उस पत्र के साथ नहीं जाने के अतः अब भी जवा दिये हैं—

धर्मस्नेही
नीहालचंद्र
सोगानी

TELE { GRAM : "SOGANS" PHONE : 33-4735

ESTD. 1932.

HEAD OFFICE { IMPERIAL ROAD, AJMER

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12. NOORMULL LOHIA LANE.

13

ॐ

Calcutta 25. 7 1954

श्री कहान गुरुदेवाय नमः

आत्मार्थी गुलाब बहिन

से नीहालचंद्र का धर्मस्नेह - आशा है पूज्य गुरुदेव सुख शांति में बिराजते होंगे - मुमुक्षु मंडल प्रतिक्षण आत्माश्रित सुख की वृद्धि में रत होंगे -

आपका पत्र यथासमय मिला था - मेरा अजमेर में तो लगभग १५-२० दिन सही रहना हुआ था - आपने लिखा कि "विकल्पनुं कांईक कार्य आव्युं नहीं" सो हमारा तो सिद्धान्त भी यह ही है कि विकल्प के अनुकूल कार्य होवे ही यह आवश्यक नहीं है - विकल्प विकल्प में - कार्य कार्य में!

मोक्षमार्गी को, कुटुंबीजनों मध्ये सुख मिलता होवे यह कल्पना ही ग़लत है ※ उसे तो निरंतर आत्म रमणता चाहीए - अरे जिसे धार्मिक जनों के संग भी नहीं रुचते उसे कुटुंब संग तो रुच ही कैसे सकता है! अरे विकल्पाश्रित पदार्थ से भी लाभ नहीं ~~सो~~ विकल्प से भी लाभ नहीं -

आपने लिखा कि नि. नै. संबंध ओवो छै कि तीव्र भावना हत तो पापनो उदय पलटीने पुण्यनो उदय ~~थाय~~ थई जाये - विकल्पानुसार पदार्थ

Selling Agents :
J. C. MILLS LTD.
Birlanagar.

THE GWALIOR RAYON SILK MFG. (WVG.) CO., LTD. (Gwalior)

BIRLA HOSIERY FACTORY.
Birlanagar,
GWALIOR

"आलसी भुवनवास
जालसी जगवीपास

※ काल सा कुटुंब
काज - लोकलाज
लारसी - " बनारसी-दासजी

की प्राप्ति होना पुण्य नहीं है वरन् तीव्रता पलट कर मंदता होना पुण्य है - अतः राग छूटने अथवा कम होने में सुख है, पदार्थ के मिलने में नहीं - अतः आत्माश्रित राग की मंदता होवे यह ही भावना है -

गुरुदेव कहते हैं :- " इच्छा मां सावधान पणुं ज्ञानीने नथी पोताना स्वभावनुं सावधानपणुं चूकीने परपदार्थ मां सावधान पणुं ज्ञानी करतो नथी" - ज्ञानीने इच्छानी इच्छा नथी - प्रदेशे २ मैं मात्र चैतन्य २, व आनंद ही आनंद से ओत प्रोत वस्तु हूं, स्वरूपरचना पर्याय में स्वतः ही हुए जा रही है - इच्छा तोडूं, स्वरूप की वृद्धि करूं आदि विकल्पों का जिस सहज स्वभाव में सहज ही अभाव है - अरे! ~~[illegible]~~ सहज शुद्ध पर्याय का भी जिस त्रि. ध्रुव वस्तु में सहज ही अभाव है, ऐसी नित्य वस्तु मैं हूं, त्रिकाली परिपूर्ण हूं - ऐसी दृष्टि एक बार अवश्य २ हो जाओ, बस - सुख समुद्र का दरिया एकदम सहज उमड़ पड़ेगा - पर के लिये विकल्प करना बेकार है अरे! मैं बिना किसी के ही अभी ही परिपूर्ण हूं एक बार ऐसा तीव्र ~~[illegible]~~ भावना होनी चाहिए ताकि सामान्य वस्तु के बोध का अवसर आये - पर मैं सावधानीपणां नहीं स्व में सावधानीपणां होना चाहिए -

अरे द्रव्य सामान्य! तेरे प्रताप से झुकती हुई पर्याय (परिणाम) भी सहज खड़ी होती जाती है, अनादि का बोझा प्रतिक्षण हटता जाता है उत्तरोत्तर सुख की वृद्धि होती जाती है - धन्य है तेरा बोध -

गुरुदेव कहते हैं :- ज्ञानीने ज्यां स्वरूप निधान प्रगट्यूं

TELE { GRAM : "SOGANS" PHONE : 33-4735

ESTD. 1932.

HEAD OFFICE { IMPERIAL ROAD AJMER

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12. NOORMULL LOHIA LANE.

ॐ
पूज्य गुरुदेवाय नमः

Calcutta 25. 6 1954.

आत्मार्थी गुलाब बहिन

प्रत्ये नीहाल चेत्र का धर्मस्नेह-पत्र पहिले भी आपके मिले थे वह एक अब भी कलकत्ता में मिला - मैं करीब २ माह से कलकत्ता से बाहिर था अतः जवाब आदि नहीं दिया जा सका था - क्या बताऊं हृदय को पूर्णतया व्यक्त नहीं किया जा सकता है - यहां भी तीव्र भावनायें थीं कि पूज्य गुरुदेव के विहार में अवश्य साथ होऊं - कुछ दिनों अजमेर रहना हुआ वहां से उमराला का प्रोग्राम मा. सोमागमल दोसी मजनमंडल वालों के साथ जमाया था परंतु वह भी पूर्ण नहीं हो सका - यहां से गये पश्चात २०-२५ दिन शारीरिक अस्वस्थता के कारण देर अधिक हो गई थी अतः मील वालों के तार टेलीफोन बहुत आने से अत्यंत खेद है कि पू. परमोपकारी गुरुदेव के दर्शन बिना ही कलकत्ता वापस

Selling Agents :

J. C. MILLS LTD.
Birlanagar.

THE GWALIOR RAYON SILK MFG. (WVG.) CO., LTD.
(Gwalior)

BHARAT TRADING CO., LTD.
Birlanagar,
GWALIOR.

TELE { GRAM : "SOGANS"
PHONE : 33-4735

ESTD. 1932.

HEAD OFFICE { IMPERIAL ROAD,
AJMER 14

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12, NOORMULL LOHIA LANE,

Calcutta 9-9 1955

आत्मार्थी

धर्मस्नेह - पत्र १ आज दिन आपने किसी के मार्फत भिजवाया था सो मिला है - पहिले भी अजमेर में मिला था - कई कारणों से जवाब लिखने की वृत्ति सक गई, व अब भी पत्रादिक लिखने को मन नहीं करता है - हमारी तरफ के आपको विकल्प होते हैं; पर विकल्पों में तो जागृति सदा हेय होनी चाहिए, चाहे वह साक्षात् तीर्थंकर के प्रति ही क्यों न होवे - निज द्रव्य में अस्तित्व का निरंतर श्रद्धान, व सहज अनुभव रहने से, सहज ही विकल्प टूटने लग जाते हैं व सहज ही निर्विकल्प स्वाद आने लगता है जिसके आस्वादन किये बाद विकल्पों का रस सहज ही ठंडा पड़ने लग जाता है - हमारा तो मन निज चैतन्य बिंब के अलावा अब कहीं नहीं जाना चाहता - लौकिक दृष्टि से हमारा १-१॥ वर्ष से अधिक का समय तीव्र असाता की दशाओं में रहा अतः इस कारण से भी पत्रादिक की वृत्ति ओछी रही - हमारी

Selling Agents :
J. C. MILLS LTD.
Birlanagar.

BIRLA HOSIERY
FACTORY.
Birlanagar,
GWALIOR

तो यह ही इच्छा है कि आपके विकल्प भी और कहीं इधर उधर न जाकर अपनी निज चैतन्य प्रतिमा को पढ़ने लग जायें तो वस्तु का आश्रय होते ही अपूर्वता प्रकट होवे व हमारी तरफ़ के निरर्थक विकल्पों का अन्त हो जाये-

हमारा पत्र आदि न मिले तो कोई ख़याल नहीं करना चाहिए - हमारी यहां आने की जिज्ञासा काफ़ी है अभी योग्यता नहीं है आने पर स्पष्टता कर सकेंगे-

श्री गुरुदेव का प्रसाद दैनिक यहां आता है उनका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक होगा -

धर्मस्नेही -
नीहाल चंद्र

TELE { GRAM : "SOGANS"
PHONE : 33-4735

ESTD. 1932.

HEAD OFFICE { IMPERIAL ROAD,
AJMER 15

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

12, NOORMULL LOHIA LANE,

Calcutta 23-3 1956

ॐ

श्री सद्गुरुदेवाय नमः

आत्मार्थी गुलाब बहिन से

नीहालचंद्र का धर्मस्नेह - कलकत्ते से एक भाई वहां गये थे उन्होंने आप के समाचार कहे थे - विद्वत्परिषद पर वहां पहुंचने का निश्चय किया था वह भी कुछ ही समय अर्थात एक हफ्ते तक वहां ठहरने का, सो प्रोग्राम बदलने से फिर सकना होगया - कुछ योग ही ऐसा है, पूर्व कर्म भी ऐसे हैं कि उत्कृष्ट संयोग से वंचित रहना पड़ रहा है - सर्व प्रथम सोनगढ़ गया था तब ही तीव्र भावना थी कि वहां कोई मकान का प्रबंध कर निरंतर गुरुदेव के चरणों में लाभ उठाऊं परन्तु योग ऐसा है कि अब के तो बरसों से भी दर्शन नहीं होसके - इस भाव में तो वहां की वारंवार स्मृतियां प्रबलतर होती जारही हैं व परिषद पर पहुंचने का योग भी नहीं बना, गोया मुझे परिषद से अधिक प्रेम नहीं था फिर भी सुयोग समझ कर समय चुना था - ऐसी हालत में पत्र लिखने का विचार हुआ सो लिखा जारहा है -

Selling Agents :
J. C. MILLS LTD.
Birlanagar.

BIRLA HOSIERY
FACTORY.
Birlanagar,
GWALIOR

जिस आत्मद्रव्य में परिणाम मात्र का अभाव है उसमें जम गया हूं - परिणमन सहज, जैसा होता है होने दो, हे गुरुदेव! आपके इन वचनों ने अपूर्व निश्चलता पैदा कर दी है - चंचलता व निश्चलता तो परिणाम में है मैं नित्य हूं, मेरे में नहीं, यह अनुभव अपूर्व है - परिणाम क्षण क्षण निराकुलता को वृद्धि पामते हैं - " तो पण निश्चय राजचंद्र मनने रह्यो, गुरु आज्ञाए थाशुं तेह स्वरूप जो " - सम्यक् पुरुषार्थ से या तो पुण्य योग होकर, अनुकूलता प्राप्त होकर राग टूटे अथवा पुण्य के अभाव में वीतरागता बढ़ कर राग टूटे - राग टूटना निश्चित है क्यों कि [illegible] अराग रहित स्वभाव का आश्रय लिया है व वीर्य की क्षण २ उधर ही उधर सहज उन्मुखता होने से ज्ञान आनंदमयी अरागी परिणाम ही वृद्धिगत होंगे यह नियम प्रत्यक्ष अनुभव गम्य है -

अभी रात्रि के आठ बजे हैं मंदिरजी जाने का समय है अतः बंद करता हूं -

सबों को धर्मस्नेह

धर्मस्नेही
नीहालचंद

17

TELEGRAM : "SOGANS"

ESTD. 1932.

TELEPHONE : 33–2510 P.P.

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

श्री गुरुदेवाय नमः

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,

Ref. No.

Calcutta, 7. 13 - 8 1961.

धर्मस्नेही

आपका व का पत्र मिला था- मेरे सोनगढ़ आकर श्री. गुरुदेव की वाणी का लाभ लेने वास्ते लिखा सो जाना- मैं शायद सितंबर के अन्त में वहां आसकूंगा इसके पहिले आना होता नहीं दिखाई देता-

मुझे आपके पहिले के पत्र नहीं मिले थे कारण समझ में नहीं आया-

आशा है गुरुदेव श्री. सुखसाता में विराजते होंगे-

आपका-
नि. चंदु सोगानी.

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS NAGPUR LTD.
NAGPUR.

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.

18
19-10-61

TELEGRAM : "SOGANS"

ESTD. 1932.

TELEPHONE : 33-251

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD.

Ref. No. .....

ॐ

Calcutta, १९-१० 196

चैतन्यमूर्ति श्री गुरुदेवाय नमः

आत्मार्थी

धर्मस्नेह -

आपका वात्सल्ययुक्त पत्र यथासमय मिला - भरतखंड का अलौकिक कर्ता-कर्म अधिकार, आत्मरस से ओतप्रोत वक्ता साधक-मुमुक्षुगण श्रोता, जिनालय की सामूहिक भक्ति, निरंतर अमृत वाणी से संस्कारित, तृप्त भूमिस्थान आदि समवसरण से दृश्य पुण्यहीन को नहीं संभवते अतः वियोग है - जा[illegible] प्राप्त करने की तीव्र प्रतीक्षा है।

पू. गुरुदेव कहते हैं "बहुमान आदि के शुभराग की महिमा [illegible] आकर, उत्कृष्ट चिदानंद स्वभाव की अनुपम महिमा के [illegible] का पराक्रम होने पर अंतर स्वभाव में वलण होता है [illegible] सीमा को उल्लंघन किये हुए पूर्व उदय, अखंड स्वरूप संस्थान में दौड़ लगाते हुए, सीमा स्पर्श के पूर्व ही भयभीत होकर निराश्रय, जड़खड़ा कर गिरने लगते हैं - क्रमः क्रमः पूर्णता होने की, सुख शांति के अनुभव पूर्वक निशंकता वृद्धि पाती है।

बलवान का सब साथ देते हैं, साधक के अखंड बल के जागृत होते ही, अचेतन पुद्गलादि भी अखंड स्वरूप [illegible] वर्तकर सहायक (व्यवहारे) होने लगते हैं -

पत्रोत्तर मिलना - नहीं मिलना, विलंब होना आदि सब विस्मृत करने योग्य हैं। ज्ञानानंद स्वभाव की अनुभूति में भंग पड़ने पर लिखने आदि के विकल्प होते हैं सो सब स्वरूप से निकलते ही प्रत्यक्ष, उन्मत्त-पागलपन की जड़दशा स्वयं अनुभवाते हैं - जड़ से जड़ के संबोधनों में चेतन को कोई [illegible]

वर्तमान पर्याय में पूर्व उत्तर काल की पर्याय का ज्ञान विद्यमान है तब स्मरण, मनन का बोझा उठाना व्यर्थ है

शुभ योग में भी थकान अनुभव करने वाले जीव लौकिक योग की तीव्र दुखदशा पर हे करुणा सिंधु! क[illegible] करो - करुणा करो - यह ही विनंती -

पर्याय ही पर्याय का कर्ता है, त्रिकाली अंश निरंतर समाधि इच्छु अथवा आखा द्रव्य नहीं यह कर्ता कर्म की चरम सीमा है - अतः पर्याय में आखा सबों को यथायोग्य एकाकार होना योग्य नहीं।

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS NAGPUR LTD.
NAGPUR.

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.

19 9

ESTD. 1932.

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

TELEPHONE : 33-2510 P. P.
TELEGRAM : "SOGANS"

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,
Calcutta-7, 1-11 1961.

ॐ

Ref. No.

सततदृष्टिधारा बरसाते, अखंड चैतन्य के प्रदेशे २ सहज महान दीपोत्सव की क्षणे २ वृद्धि करते श्री. गुरुदेव को अत्यंत भक्तिभावे नमस्कार

धर्मानुरागी

पत्र यथासमय मिला, मेरे प्रति के अनुरागसे, वारंवार आप लोगों को मुझे वहां बुलाने का विकल्प होता है परन्तु पू. गुरुदेव के सान्निध्य दीपावली अवसर पर मुझे लाभ संभव नहीं है - आंख ओपरेशन का समय कम रह गया है सो पूरा २ ख्याल में है -

श्री. दीपचंदजी आदि वहां आये हुए हैं व मेरे संबंध में कुछ बात भी हुई लिखा सो जाना -

अधिक क्या लिखूं - श्री. बनारसीदासजी के पद दोहरा देता हूं

"मैं त्रिकाल करनी सो न्यारा, चिद्विलास पद जग उजियारा,
राग विरोध मोह मम नाहीं, मेरो अवलंबन मुझ मांहि।"

"तजि विभाव हूजे मगन, शुद्धातम पद मांही,
एक मोख मारग यहै, और दूसरो नांही।"

आप सबों को जयजिनेन्द्र -

आपका
निरीच्छक मोक्षाभिलाषी

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS
NAGPUR LTD.
NAGPUR.

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.

ESTD. 1932.

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

TELEPHONE : 33-2510 P. P.
TELEGRAM : "SOGANS"

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,

श्रीसद्गुरुदेवाय नमः

Ref. No.

Calcutta-7, 9-4 1962.

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS
NAGPUR LTD.
NAGPUR.

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.

धर्मस्नेही

से शुद्धात्म सत्कार - आपका कार्ड व पत्र मिले - मानस्तंभ के शुभ प्रसंग पर भी मैं वहां नहीं आसकूंगा इसका कारण पत्र के साथ भेजी गई शादी की पत्रिका से मालूम होगा - बड़े पुत्र की शादी ता: १६।४ की है - पुण्यवानों को शुभ प्रसंग का योग है उन्हें अशुभ प्रसंग पर बुलाना ठीक नहीं है फिर भी लौकिक व्यवहार वश दो पत्रिकाएं भिजाई हैं - वहां से आये पश्चात परिणति कीचड़ में ही फंसी रहती है, जैसी योग्यता है वैसे ही निमित्तों मध्ये रहना हो रहा है प्रत्यक्ष दुख समूह में वेदन चलता है परन्तु एक घी झर में हरना नहीं होता है - रस बिलकुल नहीं है - खेद वर्तता है फिर भी इधर से निवृत्ति योग नहीं बैठता यह भी पूर्व कर्मों की दैन ही है - अखंड की अखंडता का प्रयास भी शिथिल सा ही रहता है, हे गुरुदेव आपमें तीव्र भक्ति का उदय होने से ही इधर के दुख का इलाज होगा दूसरा कोई इलाज नहीं यह भली भांति जानता हूं -

अधिक क्या लिखूं - सोनगढ़ की दया का पात्र आपके उलहने सुनने योग्य हूं - क़रीब १ माह से कुछ शारीरिक अस्वस्थता भी चल रही है -

हे प्रभो शीघ्र इधर से निवृत्ति होकर गुरुचरणों में रहना हो वे जिन्होंने अखंड गुरुवास में चरना सिखाया है - यह ही विनती -

आप सब से क्षमा का इच्छुक व आपकी वात्सल्यता का आभारी

निहालभाई -

22

ESTD. 1932.

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

TELEPHONE : 33-2510 P.P.
TELEGRAM : "SOGANS"

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,

Ref. No.

Calcutta-7, १४-६ 1962.

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS
NAGPUR LTD.
NAGPUR.

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.

श्रीसद्गुरुदेवाय नमः

आत्मार्थी

धर्मस्नेह -

पत्र आपका मिला - इसके पहिले एक पत्र यहां लग्न के समय मिला था जिसका जवाब भी दिया था इस मध्ये तो कोई पत्र मिला नहीं - हर पत्र में मेरे वहां आने के लिये स्वाभाविक राग वश आपका अनुरोध रहता है व न आने के लिये बहुत प्रकार का उलहना व उपदेश भी - मेरे परिणामों की स्थिति समय २ की लिखी तो नहीं जा सकती इतना ही कह सकता हूं कि बिना रस के भी परिस्थिति वश लाचारी से ही इधर के अशुभ उपयोग में रहना होता है - मेरी भूमिका में अशुभ उपयोग की ही अधिकता है स्थिरता के प्रयत्न समय भी - अधिक क्या लिखूं ध्रुव आत्मा तो परिणामों में भी किंचित उथल पुथल नहीं कर सकता - ध्रुव में श्रद्धा की यथार्थ व्यापकता का यह नियम श्री गुरुदेव ने बताया है व सही है समझ में भी है - राग को इधर करो उधर करो आदि तो परिणामों पर अस्तित्व समझने वालों के लिये मुख्यतः अपेक्षाओं के कथन हैं - परिणाम शुभ हैं, अशुभ हैं इनमें कितना पुरुषार्थ भी सहज लग जाता है आदि ध्रुव की एकता सहित के ज्ञान में आता रहता है - श्रद्धा की अखंड एकता के साथ ही चारित्र की अखंडता भी ध्रुव के साथ हो जाये यह ही लक्ष है व यथार्थ श्रद्धा के साथ ऐसा ही होगा यह ही नियम है इसके हुए बिना - मात्र ऐसा हुए बिना जीव को चैन नहीं - अन्य तरफ के राग में निरंतर रस नहीं चाहे क्षणिक रस दिखाई भी दे - शुभ निमित्तों के संग में अधिक मंद कषायादिक होने से स्थिरता भी अधिक व शीघ्र होती रहती है यह भी ज्ञान में है परंतु मुख्य संग तो निर्बाध अपराधीन चेतन का ही है अन्य संग तो उदयाधीन हैं - अधिक लिखने में सार नहीं - उधर

आने के विकल्प भी बहुबार उठते हैं पर अधिक ज़ोर नहीं खाते- आपके पत्रों के मात्र उधर आने बाबत लिखे होने का अतः क्या जवाब दूं- मेरी ऐसी स्थिति में अतः वहां के रोज़ाना या हफ्ताह के खासर गुरुदेव की के न्याय आदि लिखो तो अधिक प्रिय लगेंगे- आना तो होगा जब होगा शायद जल्द आ भी जाऊं ऐसा योग भी दिखता तो है-

धर्म स्नेह-
आत्मार्थी

ESTD. 1932.

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

TELEPHONE : 33-2510 P. P.
TELEGRAM : "SOGANS"

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,

Ref. No.

Calcutta-7, 8. 11 1962.

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS
NAGPUR LTD.
NAGPUR.

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.

ॐ

श्री गुरुदेवाय नमः

आत्मार्थी

शुद्धात्म सत्कार। आपका दीपावली कार्ड तत्पश्चात पत्र मिला - समझ नहीं आता क्या लिखूं - उत्कृष्ट पुण्य योग से, ज्ञान आनंद की खान अपूर्व सत्पुरुष श्री गुरुदेव, निमित्त स्वपे आपके समीप हैं जिनकी निरंतर ध्वनि का संकेत उनकी ओर से लक्ष हटाकर स्व की अंतरंग खान का लक्ष कराता है जहां से यथार्थ न्याय सुख आदि उघड़ते रहते हैं। अतः स्व अस्तित्वमयी त्रिकाली आत्मा में पसर कर सुखास्वादन करो जिस स्वाद के वशीभूत देवादिक प्रत्ये भी उदासीनता होने लगती है - इनमें अर्थात परमें एकांते रस वजागृति होना स्वभाव के अरस पणे का सूचक है - वर्तमान में ही मैं परिपूर्ण सुख का सागर हूं वर्तमान में ही देवादिक से अथवा इन आश्रित राग से किंचित लाभ नहीं - लाभ मानना ही स्व का अलाभ है - यह न्याय तीर की तौर बाह्य वृत्ति लक्ष प्रति असर करे तो वर्तमान में ही स्वभावोन्मुख प्रयत्न होवे

शुद्धात्म स्नेही
नि. चंद्र

ESTD. 1932.

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

TELEPHONE : 33-2510 P.P.
TELEGRAM : "SOGANS"

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,

Ref. No.

Calcutta-7, 9-12-1962.

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS
NAGPUR LTD.
NAGPUR.

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.

आत्मा थी

धर्मस्नेही / पत्र ता. २२/११ का यथास्थान यथाकाल /
आत्मिकता में देवादिक प्रत्ये के परिणामों में रंचमात्र वर्तते वं अखंड के सद्भाव रूप परिणमन होते हुए धर्मी जीव को बुद्धि पूर्वक देवादिक प्रत्ये स्वस्वरूप दृढ़ीभूत करने के आशय की प्रवृत्ति मुख्यतौर से होती रहती है ऐसा दिखता है" इसपर विशेष स्पष्टीकरण चाहा सो मालूम हुई।

1. स्वस्वरूप की दृढ़ता देवादिक के प्रत्ये की वृत्ति से निश्चय ही नहीं होती।
2. मन आसक्तता विचार पूर्वक या मान्यता से अखंड आसक्त सहज आंशिक वृत्ति का सद्भाव नहीं होता।
3. त्रिकाली आस्तित्व मयी स्व, इस आसक्त परिणामी दुःखी आंशिक वृत्ति व देवादिक प्रत्ये की आंशिक बाह्य वृत्ति, तीनों अंशों का एक ही समये धर्मी को अनुभव होता है जिस में मुख्य गौण का प्रश्न नहीं।
4. स्व के माप से अन्य का माप किया जाता है। में त्रिकाली ही हूं इस अनुभव में परिणाम मात्र गौण है चाहे बुद्धि पूर्वक हो अथवा अबुद्धि पूर्वक - ऐसे धर्मी को परिणाम की मुख्यता नहीं होती अतः उसे अन्य धर्मी जीव में भी परिणाम की मुख्यता नहीं दिखाई देती जैसी कि मात्र परिणाम देखने वाले को प्रवृत्ति की मुख्यता दिखती है।
5. धर्मी; अधर्मी के भी त्रिकाली वं वर्तमान दोनों को एक साथ देखता है - त्रिकाली का अज्ञान होने से अधर्मी परिणाम मात्र में एकत्व होता रहता है इसका धर्मी को ज्ञान रहता है -
6. त्रिकाली की मुख्यता वाले धर्मी के सहज ही इस आसक्त वृत्ति की ही मुख्यता रहती है, वर्तती है, चाहे बाह्यांश में बुद्धि पूर्वक प्रवृत्ति हो।
7. त्रिकाली तो प्रवृत्ति, निवृत्ति स्वरूप परिणाम का ही कर्ता नहीं है - परिणाम का कर्ता परिणामी है यह अपेक्षा भी अपनी पकड़ में आई ही

धर्मस्नेही

ESTD. 1932.

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

TELEPHONE : 33-2510 P. P.
TELEGRAM : "SOGANS"

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,
Calcutta-7,

Replied 22-2-63

Ref. No.....

21-1-1963

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS
NAGPUR LTD.
NAGPUR.

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.

આદરણીય શ્રી.

સાદર જયજિનેન્દ્ર - આશા છે આપ
વહાં કુશલ હોંગે - કુછ દિનો પહિલે આપકા કાર્ડ યથા
સમય મિલા થા, આપકો દો માહ કા પ્રોગ્રામ ડિસવાળા
રહને કા લિખવા થા - આશા છે અબતક આપ ચલ રહા
હોગા - Retired Life મેં પહિલે કે મુકાબિલે મામલે
બોમા હલવા મહ્ત્વ કરતે હોંગે - સામાજ કો
ઔર જાને કા ભી પ્રોગ્રામ હે યા કબ - વાસ્તવિક
ગ્રંથો મેં વિસ્તર ગ્રંથો કા સ્વાધ્યાય ચલ રહા હૈ
જ્ઞાનભંડાર આત્મા મેં તો જ્ઞાન ભરા રહતા હૈ પર
ન નહીં યહ અધ્યાત્મિક સિદ્ધાંત વિચારણીય હૈ -
ઉત્તર ક્ષણ મેં ક્યા પરિણામ હોગા ઉસકા વર્તમાન ક્ષણ
મેં હમેં જ્ઞાન નહીં તો ભવિષ્ય કે લિયે કોરી વ્યર્થ કી
કલ્પના - પરિણામ કે અટકાવા રાસ્તારાદિક કી
ક્રિયા મેં તો હમારા કોઈ કર્તૃત્વ હૈ હી નહીં તો ફિર
ઇનકે આશ્રિત વિભાવ પરિણામો કો વ્યર્થ બોઝા લાદા
જાયે - ઉદ્દેશ નિર્ણય કરના સહજ પર ઉસકી પ્રાપ્તિ મેં
સમય અધિક લગતા હૈ - યથાર્થ નિર્ણય બાદ હી
યથાર્થ કી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ - ~~અતઃ~~ અનુકૂલતિ યથાર્થ
નિર્ણય કી નિરંતતા બતા સકતી હૈ - ચૂંકિ આપ
કા સમય અબ અધ્યાત્મ કો તરફ અધિકતર જા રહા અતઃ
ઉપર બાતેં ઉપર સહજ હી લિખવી ગઈ હૈં -

આગે કા પ્રોગ્રામ લિખવે

દર્શનાભિલાષી
ને. રૂ. સોગાની

ESTD. 1932.

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

TELEPHONE : 33-2510 P. P.
TELEGRAM : "SOGANS"

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,

ॐ

Ref. No.

Calcutta-7, 27. 2 1963

श्री. सद्गुरुदेवाय नमः

आत्मार्थी

धर्मस्नेह - मालूम होता है कारणवशात् निहालभाई के क्षणिक व्यवहार से विरक्ति हो गई है। विरक्ति तो सदैव उपादेय ही है व सहज विरक्ति मुमुक्षुओं का ध्येय भी है।

पू. गुरुदेवश्री की आंख में नीडलींग की आवश्यकता नहीं रही जानकर आनंद हुआ व पूज्यश्री. का फागुण सु. ६ से तीन माह वास्ते सौराष्ट्र में विहार होगा जाना - पुण्ययोग होने से उनके दर्शन, प्रवचन का पुनः लाभ मिल सकेगा -

आपकी दी हुई 'बनारसी विलास' पुस्तक का वांचन चल रहा है लिखा है :- "एक निगोद शरीर में एते जीव बखान, तीन काल के सिद्ध सब एक अंश परिमान"

"सो पिंड निगोद अनन्तरास, जिय रूप अनंतानंत भास,
भर रहे लोक नभ में सदीव, ज्यों घड़ा मांहि भर रहे घीव"

केवलीगम्य यह अनंतता साधक के अनुभावगम्य ज्ञान में प्रत्यक्षवत् है। निष्कंप गंभीर ध्रुव स्वभाव आश्रये सहज ऊंडे २ उतरते २ यह ज्ञान हम सब को प्रत्यक्ष होवे यह ही भावना -

धर्मस्नेही
निहालभाई.

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS
NAGPUR LTD.
NAGPUR.

TELEGRAM : "SOGANS"

ESTD. 1932.

TELEPHONE : 33–2510 P.P.

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,

Ref. No.

Calcutta. 11. 3 1963.

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS NAGPUR LTD.
NAGPUR.

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.

श्री.

सादर जयजिनेन्द्र –

पत्र आपका मिला था आशा है ज्वर खांसी आदि ठीक होकर अब आपका सांयमत्व विटामिन ठीक होगया होगा। फिलहाल अभी डोंडवाना ही रहने का प्रोग्राम है सोनिगाह किया। ज्ञान-ज्ञेय स्वभाव पुस्तक अच्छी है – अखंड त्रिकाली ज्ञानस्वभाव को ज्ञेय बनाकर इस आश्रय एकाग्रता आत्म परिणाम विभाव अंश से भिन्न रहता हुआ, विभाव को पर की तरह जानता देखता है – यह ही भेदज्ञान है – साधक को एक ही समय में, एक ही परिणाम में दोनों प्रकार का भिन्न अनुभव होता है अर्थात ज्ञानभाव का आंशिक विभाव अंश से पृथक स्वाद का प्रत्यक्ष अंतर भासित होता है –

सो. आशा को मलीबार यहां से २२।२ को अजमेर गाड़ी से आशा सो लिखा था कि उनसे मिलने का प्रोग्राम बनाते थे परन्तु उसका कोई जवाब नहीं आया। आप उससे अजमेर पत्र डाल कर प्रोग्राम बनवा देवें वहां लिखवा देवें कि कब वह इसे लेने को नाथू महाराज को डोंडवाना भिजवा देवें व कब तक यह अजमेर रह सकती है – इससे मिलने का ही इसका मलीबार का फलितमता आज का प्रोग्राम बन सकेगा –

आशा है कुंवर सा. स्वस्थ होंगे, उनका कार्य ठीक होगा। अर्हत् आशा को हमारे आशीर्वाद व जयजिनेन्द्र कहें।

हमेशा की तरह

सोनगढ़ से आपी पुस्तक
राग छोड़ गये हुए हैं
उनसे कह ज्ञान साहित्य
आप उनके मकान पर
का प्रोग्राम बनाते
तो अत्यधिक साथ होगा –

ESTD. 1932.

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

TELEPHONE : 33-2510 P.P.
TELEGRAM : "SOGANS"

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,
Calcutta-7,

Ref. No.

14.7.196

ॐ

श्री सद्गुरु कृपायै नमः

आत्मार्थी श्री.

शुद्धात्म सत्कार—

गत माह आपका पत्र आया था तब मुझे बंबई में पहुंचते रिडायरेक्ट होकर मिला था- इस पहिले फरीब जनवरी में पत्र आया था उसका उत्तर दो तीनों के पत्र के साथ दिया था- जैसा इस पत्र द्वारा मालूम हुआ उनके यहां अब आपका आना जाना नहीं है अतः पहिले वाला पत्र आपको नहीं मिला होगा।-

तत्वदृष्टिए स्वभाव बल से जमते ही आना जाना व न आना जाना, मुद्दे ज्ञान में-सहजही मोहभाव प्रतिभासित होते हैं यह मोहभाव अनेकाल से पौद्गालिक ही है तो इनकी पकड़ क्यों? यह हमारे है ही नहीं ऐसा इनसे भिन्न अनुभव, मात्र हमारा लक्ष हो जाना चाहिए-

"भेदज्ञान से भ्रमगयो नहीं रह्यो कुछ आस, धर्मदास क्षुल्लक कहे छोड़ो मोह को फांस"

पू. श्री गुरुदेव के उपदेश का सार, द्वादशांगी का सार तो येक वाक्य ही है कि अपने त्रिकालीस्वभाव में जैसे तैसे भी होवे दृष्टि पसार कर विराजमान होजाओ, क्षणे क्षणे वीतरागी ज्ञायकरस में ऐसी मग्नता बढ़ती जावेगी जिसका विच्छेद एक क्षण भी नहीं गमेगी।-

योग नहीं होने से महाराज सा. का सोनगढ़ लौटने का प्रोग्राम लंबा जाने से बंबई से सोनगढ़ आने का मेरा प्रोग्राम बदला गया। पुण्य योग होने पर दशहरे के आसपास आने का विकल्प है- आप सर्वानुसार पू. गुरुदेव श्री की अमृतवाणी का लाभ लेते होंगे. जिसका तात्पर्य उनकी ओर से दृष्टि उठवा कर, पलटवा कर, निज अमर्यादित अमृत स्वभाव में व्याप्त करना है-

शेष मिलने पर— सर्व संग से असंग होने वाला

निष्कर्ष भू—

Selling Agents :

EE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS
NAGPUR LTD.
NAGPUR.

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.

ESTD. 1932.

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

TELEPHONE : 33-2510 P. P.
TELEGRAM : "SOGANS"

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,
Calcutta-7,

Ref. No.....

ॐ

परम उपकारी श्री. गुरुदेव को वंदन/ 21-8 1963.

पूज्य लेखनी बहिनों से,

शुद्धात्म सत्कार। आपका पत्र आज मिला। परम उपकारी श्री. गुरुदेव सुख शांति में हैं व उनकी अमृतमयी छाया वाणी का आप लोग अपूर्व लाभ ले रहे हैं जान कर सहज प्रसन्नता

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

आपका राजकोट वाला पत्र यथासमय मिल चुका था बहुत उत्साह न था परन्तु मेरा पुण्य ऐसा कहां कि पूज्य गुरुदेव की वाणी का बारंबार लाभ होवे। आपके पत्रों में मेरे वहां आने के बारे में ही मुख्यता मिल अगुरो ध रहता है, आने की योग्यता तो नहीं होती तो क्या जवाब दूं सोनगढ़ आने का विचार करके बंबई तक आना हुआ परन्तु महाराज के विहार से लौटने की तिथी में अकस्मात बार २ फेर पड़ा आना वापस बंबई से ही लौटना पड़ा।-

THE MODEL MILLS
NAGPUR LTD.
NAGPUR.

आपका लिखना कि संसार के विकल्प पर पड़े और कार्य में अनिवृत्ति रहने से मात्र सोनगढ़ की बात हृदय में खटका करती है उसके संबंध में जवाब देने - यहां तो पू. गुरुदेव के आत्मा में बात करने का चलाया है आत्म. क्षणिक विकल्प भी सहज विलय हो तो रहते हैं कहना हुआ कि विकल्पों से तेरा संग अनादि से दुख अनुभव करता आया है अब तो मीठा छोड़। यहां दुख वाला रहने की चाहना है तो सर्व ओर से बाहर से मुख मोड़कर श्री गुरुदेव की भक्ति - सेवा - शरण में ही उनके निकट ही वर्ते, इस क्षेत्र में तो आत्मिक सुख का है - चूंकि गुरुदेव ने इसको ऐसा बात कर विश्वास करवाया है आत्म: यह भी लंबा कर साथ नहीं देता -

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.

जैसो शेवखेत बसे, तैसो ब्रह्म पहांचत। यहां वहां की नाहीं दारवे विचार मेरे प्रति आपका अनुराग झलके है। पू. गुरुदेव कहते हैं कि तुम स्वयं आत्म चैतन्य धाम हो, इस अगाध सागर का सहज अनुराग का पराश्रित अनुराग तो एकांत दुख है, सुखधाम तो अंदर है उसके लक्ष सहज जंजाल ओर्चा नहीं। अपने तो एकांत शांत सुख से आत्मा के चैतन्य धाम बनकर रहे - विकल्प वा विकल्प जैसी अवस्था होने दो

करता, करम क्रिया भेद नहीं भासतु है, अकर्तृत्व शक्ति अखंड रीति धरै है।
पाछी के गवेषी होय ज्ञान मांहि जाय जीजै, पाछी की जखानी, या अनंत सुख भरै है

वहां छह-छह ने छहराने के विकल्प जाल को लंबाने से क्या लाभ - विकल्पानुसार क्रिया होना आवश्यक तो नहीं - जैसा योग है हो जायेगा - चिंता तो ओछी ही अच्छी - निकट भविष्य में वहां आने का विचार अवश्य है परंतु सदैव की टेव अनुसार प्रोग्रम अकस्मात ही बनता है अतः समय लिखने के अयोग्य हूं -

विकल्प रस में अनुभव रस का अभाव है, एक की ओर झुककर लंबाने से दूसरे का अभाव होता है -

गुण अनंत के रस सबै अनुभव रस के मांहि
यातैं अनुभव सारिखो ओदे दूसरो नांहि -

विशेष मिलने पर

असंगता श्रीरुच्छुक

ESTD. 1932.
SOGANI & SONS
STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.
TELEPHONE : 33-2510 P. P.
TELEGRAM : "SOGANS"
4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,
Calcutta-7, 27.12.1963

Ref. No.

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS
NAGPUR LTD.
NAGPUR.

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.

ॐ

श्री सद्गुरुदेवाय नमः

आत्मार्थी श्री. कान्तिलालजी गोलेछा,

शुभेच्छा सत्कार।

आपका पत्र यथासमय मिला था। कई प्रकार के प्रश्न लिखे। जैन सिद्धान्त के संबंध में यथाशक्ति खुलासा लिखता हूँ:-

(1) स्वद्रव्य से, पर से अथवा क्षणिक योग्यता से ज्ञान

सर्व समाधानों का भंडार श्री. चैतन्य द्रव्य वर्तमान है। इसके दृष्टि अभेद होते ही, प्रश्न रूप विकल्प की, विकल्पों से मुक्त स्वाश्रित सहज ज्ञान क्रिया होती है वह क्रिया स्वयं ही समाधान रूप है जिससे प्रश्न संबंधी का आकुलता मिटता है। यथार्थ उक्त दृष्टि पश्चात योग्यता का वास्तविक ज्ञान होने में आता है- योग्यता स्वयं सत् अहेतुक है जिसके निश्चय में स्वद्रव्य कारण है। ~~पूर्व पर्याय उपादान~~ ~~के पर्याय~~ कार्य। यह अपादान में द्रव्य दृष्टि समझ की योग्यता में प्रकार की बुद्धि नहीं रहती व योग्यता में दृष्टि के अभेद विषय की ओर सम्यक् दृष्टिगत उन्मुख होते होते पूर्ण समाधान रूप अभेद हो जायेगी ऐसी निःशंक प्रतीति इस दृष्टि में गर्भित है।

मुनिराज, आचार्य महाराज के पास समाधान होगा जाने से उस समय में प्रश्न विकल्प से छिटकी हुई ज्ञान क्रिया उनमें वर्तती रहती है परन्तु कषायरूप अशांति के कारण प्रश्न विकल्प क्षणिक होने से प्रश्न क्रिया होती है व समाधान रूप योग्यता में आचार्य महाराज बाह्य कारण पड़ते हैं। समाधान बाह्य से हो गया की अथवा होना चाहिए ऐसा आकुलता मुनिश्री के प्रश्न विकल्प समय नहीं वर्तता।

(2) स्वद्रव्य ज्ञान

ज्ञानस्वद्रव्य के गुण की स्वतंत्र पकड़ होने से अहेतुक पर्याय

है - मूलक वेश्या का चित्र दृष्टांत रूपे पुस्तकों में है। मिथ्यात्व के
वाले चार जीवों को ज्ञान में निमित्त रूप तो एक ही विषय है परंतु
श्रद्धान भिन्न २ प्रकार का होने से भिन्न २ पड़ेगा ही है। निश्चय से
एक ही जीव को एक ही काले श्रद्धा व ज्ञान की स्वांत्र अहेतुक परिणति
होती है जो कि एक दूसरे की अकारणी पड़ती है। कार्य होने पर ज्ञान श्रद्धान
का कारण हुआ अथवा श्रद्धा ज्ञान का कारण हुआ ऐसा संबंध
बताया जाता है। व्यवहार अंगधारी मिथ्यादृष्टि कारण ज्ञान से तत्व को
पढ़ने से तत्व यथार्थ जानता है परन्तु श्रद्धा पर्याय से, रुचि से उसको अंगे
पकड़ कर प्रत्यक्ष अनुभव करता अथः दृष्टि मिथ्या की रहती है।

३) केवलज्ञान व केवलदर्शन

दर्शनगुण मात्र सामान्य को "है पणे" को अवलोकन करता है
व ज्ञान मात्र विशेष के भेदों को, अतः दोनों गुणों का दृष्टक्षेत्र व्यापक है
केवली भगवान का ज्ञान भी मात्र सर्वविशेषों को जानता है व पूर्ण
दर्शन मात्र सामान्य को। अतः केवलज्ञान पश्चात दर्शन गुण का कोई
प्रयोजन नहीं रहता यह कहना ठीक नहीं।

४) पुरुषार्थ -

स्वरूपनी प्राप्ति - प्राप्त स्वयं पर्याय स्वभाव है - वीर्यगुण की
पर्याय में सदैव पुरुषार्थ होता रहता है। नित्य, सहज, निष्क्रिय त्रिकाल
द्रव्य ~~दृष्टि~~ में दृष्टि अभेद होने पर जो पुरुषार्थ होता रहता है वह
स्वाश्रित सहज ज्ञानानंदी पुरुषार्थ रूप पर्याय स्वभाव है। वैभाविक
पुरुषार्थ, अनहज, कृत्रिम पुरुषार्थ है। सहज द्रव्य स्वभाव की अनभिज्ञता
होने से पर्याय में सहज पुरुषार्थ नहीं उपड़ता अतः मिथ्यादृष्टि नियमसार
आदि में कृत्रिम पुरुषार्थ करता रहता है। इस ही कारण "पढ़वा नहीं पढ़ेगा नहीं
पढ़ेगे" इस आशय के वहेम का वह यथार्थ आविष्कार नहीं है। उसके
आंतरप्राय में ऐसा प्रकार की कुछ तो पड़ी रहती है - उसकी स्वतंत्र पोथ्या
निरंतर परावर्तन की वार्ता ही रहती है यह ज्ञान स्वद्रव्य अवलंबन करने
वाला ज्ञानी यथार्थ जानता है।

५) संसारी जीव स्वभाव के प्रभाव अपनी रक्षा पुष्टि के हेतु अनुकूल पर को इष्ट जानता है
अतः इष्ट प्राप्ति में बाधक कारणों से द्वेष करता है - इसका कारण मात्र पदार्थ की सच्ची
समझ नहीं होना है। अध्यात्म
में यहां ७७१२ में पहुंचाया श्री. कानजीभाई शाह को धर्म स्नेह मोहित वह देखाव श्री हरिभाई
आदि अन्य पक्षीयमें आये व्यक्तियों को अवसरे सहज निर्णय पर पहुंचेहे कहना -
सबनिश्चय स्वकालांगस्पर्शन करें यही भावना - नेमि.

ESTD. 1932.

SOGANI & SONS

STOCKISTS & COMMISSION AGENTS.

TELEPHONE : 33-2510 P. P.
TELEGRAM : "SOGANS"

4/1A, GANPAT BAGLA ROAD,
Calcutta-7, 6. 5 1964

Ref. No.

ॐ

श्री सद्गुरुदेवाय नमः

आत्मार्थी

शुद्धात्म सत्कार।

आशा है परम पूज्य गुरुदेव श्री वहां सुख साता में विराजते होंगे व सर्व मुमुक्षु भाई उनकी अमृतवाणी का अपूर्व लाभ ले रहे होंगे।

यहां से मुमुक्षुमंडल के अधिकांश व्यक्ति ता. ८।५ के Bombay Mail via Nagpur से रवाना होंगे - मैं भी मेरे कुटुंबियों के साथ इसही Train से रवाना हो अंगा व बंबई ता. ११।५ को दिन के करीब ११॥ बजे यह Train वहां पहुंचती है तब पहुंचूंगा -

आप श्री. जुगराजजी को मेरे प्रोग्राम की सूचना देदेवें ताकि पहुंचने के पहिले कमरों में सफाई, पानी आदि का प्रबंध वह करा देवें -

जैसा कि आपने Suggest किया था आपशक नौकर का भी प्रबंध करदेवें जो हमें पहुंचने पर वहां तयार मिले - कमरे की सफाई, बरतन साफ करना, पानी पहुंचाना - कपड़े धोना चाय-दूध तयार करना आदि काम नौकर कर सके ऐसा होवे -

आशा है आप सकुटुंब कुशल होंगे व मिलने वाले सब मुमुक्षु भाई भी कुशल होंगे - सहज मिलने पर उन्हें यथायोग्य कह देवें।

आपका
मिहालचन्द सोगानी

Selling Agents :

SHREE RAM SILK MFG. CO.
CALCUTTA.
(Bangur Brothers Ltd.)

THE MODEL MILLS
NAGPUR LTD.
NAGPUR.

VINAR PRIVATE LTD.
CALCUTTA.